ऋग्वेद-संहिता – ऋग्वेद का महत्त्व इसकी विषय-वस्तु के अनुशीलन में निहित है। इसमें धर्म, संस्कृति, समाज, राजनीति, अर्थ, दर्शन और काव्य का अद्भुत समन्वय है। इस दृष्टि से ऋग्वेद का नाम प्रथम लिया जाता है। आकार-प्रकार में भी अन्य संहिताओं की अपेक्षा ऋग्वेद-संहिता बड़ी है। इसकी ऋचाओं का संकलन अन्य वैदिक संहिताओं में प्रचुर रूप से हुआ है, जिसमें सामवेद तो प्रायः पूर्ण रूप से ऋग् पर ही आश्रित है। वैदिक और लौकिक सभी उद्धरणों में ऋग्वेद का नाम लेकर ही अन्य वेदों का नाम लिया गया है। यह संसार का प्रथम ग्रंथ है।

महाभाष्य में इसकी 21 शाखाओं का उल्लेख है किन्तु चरणव्यूह – शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन तथा माण्डुकायन ५ की ही चर्चा करते हैं। इस समय शाकल शाखा की संहिता, आश्वलायन शाखा के श्रौत एवं गृह्यसूत्र तथा शांखायन शाखा के ब्राह्मण और आरण्यक प्राप्त हैं।

ऋग्वेद का ऐतिहासिक और पाठपरक दो विभाजन किया गया है। प्रथम विभाजन को मण्डल-क्रम कहते हैं, जो दस हैं। अनुवाक और सूक्तों में क्रमशः विभक्त हैं।

दूसरा विभाजन ग्रंथ को आठ भागों में विभक्त करता है। आधुनिक विद्वान द्वितीय से सप्तम को प्राचीनतम मानते हैं। इसमें कुल वर्गों की संख्या 2024 है (2024).

ऋग्वेद की ऋचाएँ आदि मनीषियों का दर्शन है — 'ऋषयः मंत्र द्रष्टारः', जो किसी न किसी देवता की ~~स्तुति~~ स्तुति है एवं किसी न किसी ऋषि से सम्बद्ध है। प्रत्येक ऋचा छन्दोबद्ध है। धर्म की दृष्टि से देवताओं आराधना, यज्ञों की अनिवार्यता, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक की कल्पना है। संस्कृति की दृष्टि से आचार-नियम, हिंसा-अहिंसा, शिष्टाचार और जीवन का लक्ष्य निरूपित है।

धार्मिक सूक्तों में देवताओं को परमात्मा के विविध प्राकृतिक या आध्यात्मिक रूप में देखा गया है। पृथिवी के निवासी देवताओं में अग्नि प्रमुख हैं, अन्तरिक्ष के प्रमुख देवता वायु या इन्द्र हैं, द्युस्थानीय देवताओं में सूर्य को प्रमुख देवता माना गया है। पृथिवी, रात्रि आदि देवता विशुद्ध स्त्री रूप में कल्पित हैं।

सभी देवता महान् और शक्ति सम्पन्न हैं, प्रकृति के नियमों

को व्यवस्थित एवं अनिष्ट तत्वों का विनाश भी करते हैं।

लौकिक सूक्त अत्यल्प हैं। ऐसे विषयों का क्षेत्र औषधि-विज्ञान, विवाह, लोकव्यवहार, दान, राजतंत्र आदि हैं।

तीसरे दार्शनिक सूक्त हैं, जिनमें तात्कालिक ऋषियों की दार्शनिक उद्भावनाएँ संकलित हैं जैसे अदिति को सबकुछ मानना, एक ही तत्व को सभी देवताओं का आधार कहना - एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति इत्यादि। ऋग्वेद का धार्मिक जीवन अध्यात्मवाद से प्रभावित था, यज्ञ धर्म का पर्याय माना जाता था। पुरुष सूक्त में कहा गया है - 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।'

राजनीतिक दृष्टि से समाज कुल (गृह या कुटुम्ब), ग्राम, विश, जन तथा राष्ट्र इन पाँच स्तरों पर बँटा हुआ था अनेक जनों से राष्ट्र बनता था। उसका स्वामी राजा या राष्ट्रपति होता था। राजा का कार्य राष्ट्र की रक्षा, शत्रुओं का नाश तथा राष्ट्र की श्रीवृद्धि करना था। राजतंत्र और प्रजातंत्र-शासन की दो पद्धतियाँ प्रचलित थीं। दोनों स्थितियों में अध्यक्ष का अभिषेक होता था।

आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन, वाणिज्य, व्यापार और उद्योग धन्धों पर आश्रित था। मुख्य उस युग का प्रमुख व्यवसाय व्यापार था। मुख्य व्यापार होता था। वस्तु-रूप से अन्न का व्यापार होता था। वस्तु-रूप से अन्न का व्यापार गायों की इकाई की विनिमय प्रणाली के अन्तर्गत होती थी। रूप में खरीद - बिक्री होती थी। समाज के विविध-रूपों का चित्रण ऋग्वेद में ही देखने को मिलता है।

जीवन को चार आश्रमों में विभाजित करने का कार्य ऋग्वेद-काल में शुरू हो गया था। ब्रह्मचर्य आश्रम में अध्ययन, गृहस्थ-आश्रम में महायज्ञों का अनुष्ठान, वानप्रस्थ होने पर सभी कामनाओं का त्याग और सन्यासी होने पर सभी बन्धनों से मुक्ति का पवित्र लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

संसार का प्रथम ग्रंथ होने पर भी इसका रूप 'विश्वकोश' का है।

Scanned with CamScanner